राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु कियान्वित योजनाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन

शिक्षा शास्त्र में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रारूप

निर्देशिका
डॉ. मंजू शर्मा

शोधार्थी
चित्रा गौड

शिक्षा शास्त्र संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
2020

राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को अगर समझना है तो सबसे आसान तरीका है कि हम उस संस्कृति में नारी की स्थिति को समझने की कोशिश करें। नारी समाज के सांस्कृतिक चेहरे का दर्पण होती है। अगर किसी राष्ट्र में नारियों का जीवन उन्मुक्त हो तो इसका सीधा आशय यह निकलता है कि उस राष्ट्र का समाज एक उन्मुक्त समाज है। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया, ममता, त्याग, बलिदान जैसे मूल्यों पर ही सृष्टि खडी है और से सभी मूल्य एक नारी में जन्मजात होते हैं।

वर्तमान में देश में समुचित विकास के लिए सर्वाधिक आवश्यकता शिक्षित नारी की है। क्योंकि विकास के महत्वपूर्ण अंगों में शिक्षा के क्षेत्र का सर्वाधिक ऊंचा स्थान है। शिक्षा समाज के विकास की रीढ़ है। एक ऐसा समाज जो साक्षर हो उसके आर्थिक तथा सामाजिक स्तर में विकास की संभावना अधिक होती है। शिक्षा समाज की अनेक व्याधियों का उन्मूलन कर सकती है। मानव जाति की रक्षा तथा उसकी प्रगति के लिये सबसे बडी आशा शिक्षा है। शिक्षित नारी के बिना किसी भी राष्ट्र के निर्माण व विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि– "एक बालक को शिक्षित करना केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करना है जबकि एक बालिका को करना संपूर्ण परिवार को शिक्षित करना है।" अर्थात् नारी को शिक्षित, स्वावलम्बी, सम्मानित और सामर्थ्यवान बनाए बिना समाज और राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती है। शिक्षा के द्वारा नारी जीवन की बहुत सी समस्याओं जैसे स्वास्थ्य, कुपोषण, यौन अत्याचार, घरेलु हिंसा आदि को दूर किया जा सकता है। हमारे देश में बालिका शिक्षा का स्थिति अत्यन्त दयनीय है। देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी शक्ति का आधे से अधिक भाग आज अज्ञान, निरक्षरता तथा अशिक्षा के अंधकार में भटक रहा है। शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे बालिकाएं समाज में अपनी सशक्त, समान एवं उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती हैं। शिक्षित बालिका न केवल स्वयं लाभान्वित होती है बल्कि उससे भावी पीढी भी लाभान्वित होती है। इसी कारण 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी महिला समानता के लिए शिक्षा पर बहुत बत दिया गया था। शिक्षा के महत्व के कारण ही भारतीय संविधान में शिक्षा से संबंधित

महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। संविधान की धारा ''45'' के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संविधान लागू होने के 10 वर्षों के भीतर राज्य उन सभी बालकों को जो 14 वर्ष की आयु के अन्तर्गत आते हैं, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रयास करेगा। इतना ही नहीं संविधान की धारा 21(2) में यह भी कहा गया है कि केवल धर्म ,मूलवंश, जाति, भाषा, अथवा इनमें से किसी एक के आधार पर राज्य द्वारा पोषित अथवा निधि से सहायता प्राप्त किसी शिक्षण संस्था में प्रवेश पाने से किसी भी नागरिक को वंचित नहीं किया जायेगा। दूसरे शब्दों में शिक्षा प्राप्त करना बालकों का मौलिक अधिकार है।

राजस्थान जो कि भारत के उतर – पश्चिम भाग में स्थित है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 3. 42 लाख वर्ग किलोमीटर है जो कि भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 10.4 प्रतिशत है और जहाँ भारत की 5.67 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। राजस्थान सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछडा राज्य है। राजस्थान में शिक्षा का स्तर भारत के अन्य राज्यों की तुलना में काफी कम है। यहां महिला शिक्षा की स्थिति पुरूषों की तुलना में काफी दयनीय है। जिसका मुख्य कारण सामाजिक परम्पराएं एवं रीति–रिवाज हैं। राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु बनाए गए कार्यक्रमों के प्रभाव से कुल साक्षरता में वृद्धि हुई है। राजस्थान में सरकार के द्वारा इसके निवारण हेतु कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं जिनमें से प्रमुख हैं–

1 आपकी बेटी योजना
2 कस्तूरबा गाँधी बालिका (आवासीय) विद्यालय
3 कस्तूरबा गाँधी एस.टी.डी.आर. योजना
4 गार्गी पुरस्कार योजना
5 इन्दिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार योजना
6 कक्षा 12 में 75ः से अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं के लिए प्रोत्साहन योजना
7 बालिकाओं के लिए विदेश में स्नातक स्तर की सुविधा
8 ग्रामीण बालिकाओं के लिए ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना
9 निःशुल्क साईकिल वितरण योजना
10 माध्यमिक स्तर की बालिकाओं के लिए प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना

11 राजस्थान के पूर्व सैनिकों की प्रतिभावान पुत्रियों को देय छात्रवृति योजना

12 निःशुल्क स्कूटी वितरण योजना

13 अल्पसंख्यक बालिकाओं के लिए छात्रावास सुविधा

14 (अल्पसंख्यकों से सम्बन्धित मेधावी छात्राओं के लिए) मौलाना आज़ाद

15 राष्ट्रीय छात्रवृति योजना

16 राजीव गाँधी किशोरी सशक्तीकरण योजना– सबला

17 अमलगमेटेड फण्ड से भूतपूर्व सैनिको की पुत्रियों छात्राओं को दी

18 जाने वाली सहायता/छात्रवृति

19 केन्द्रीय विद्यालय में बालिका शिक्षा प्रोत्साहन

20 शारदेय बालिका छात्रावास (रमसा द्वारा संचालित)

21 बालिका खेल प्रतिभा विकास योजना

22 एकल/द्वि पुत्री योग्यता पुरस्कार योजना

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1 **शर्मा, डॉ. देवकीनन्दन (2020) ने** सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पर शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले, प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में न्यादर्श के लिए भरतपुर एवं धौलपुर जिले के 120 शिक्षकों, 120 अभिभावकों, 60 संचालकों तथा 500 छात्रों का चयन किया गया। उपकरण के रुप में स्वनिर्मित प्रत्यक्षीकरण मापनियों का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष में पाया गया कि भरतपुर व धौलपुर मे सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव के प्रति भरतपुर व धौलपुर के शिक्षको, अभिभावकों, संचालकों एवं विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर है।

2 **दहिया, डॉ.गीता (2018) ने** उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन पर शोध किया। इस शोध कार्य का मुख्य उद्धेश्य उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति, अनुसूचित

जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति का अध्ययन करना तथा उच्च माध्यमिक स्तर की अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय संतुष्टि के मध्य परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन करना था। बीकानेर एवं जयपुर संभाग की 900 बालिकाओं पर अध्ययन किया गया। न्यादर्श चयन हेतु स्वविवेक न्यादर्श प्रणाली में उद्देश्य पूर्ण एवं यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया। उपकरण के लिए **आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति मापनी** डॉ. सी. एस महता व डॉ. एन हसन द्वारा और **शर्मा किशोर विद्यालय सन्तुष्टि मापनी परीक्षण** (SSASI) डॉ. मिनाक्षी शर्मा द्वारा निर्मित का प्रयोग किया। आंकडों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन, प्रतिशत और क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति उच्च स्तर की है। अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं से अधिक है जबकि सामान्य वर्ग की एवं अनुसूचित जाति की बालिकाओं की आज्ञाकारिता प्रवृति में कोई अन्तर नहीं पाया गया। विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय सन्तुष्टि सामान्य स्तर की पायी गई। अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि अनुसूचित जाति की बालिकाओं से अधिक हैं जबकि अनुसूचित जनजाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओं की विद्यालय संतुष्टि समान है।

3 **शुक्ला, डॉ. सुशील कुमार (2018) ने** आदिम जाति प्रखण्ड पिपराही (जिला रीवा) के आदिवासी बालिकाओं में प्रचलित सामाजिक कुरीतियाँ बालिकाओं की प्रारम्भिक शिक्षा के विकास का अध्ययन पर शोध किया। इस अध्ययन का उद्धेश्य आदिवासी वर्ग की बालिकाओं की प्रारम्भिक शिक्षा में सहभागिता की स्थिति का पता करना तथा आदिवासी वर्ग की समाजिक–आर्थिक समस्याओं का पता करना था। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए 100 बालिकाओं, 20 शिक्षकों एवं 30 अभिभावकों का चयन किया गया। आंकडों का संकलन साक्षात्कार मापनी और प्रश्नावली के द्वारा किया गया। शोध परिणाम में यह पाया गया कि बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अरूचि, धार्मिक व सांस्कृतिक परम्पराएं, अशिक्षित माता–पिता आर्थिक विपन्नता एवं बाल–विवाह शिक्षा की निरन्तरता में प्रमुख बाधक है। अनुसूचित जनजाति

वर्ग के अभिभावक आज भी अपने बालिकाओं की प्रारम्भिक शिक्षा के प्रति सजग नहीं है। अनुसूचित जन जाति के बालिकाओं के अभिभावकों की पलायनवादी प्रवृत्ति शिक्षा के विकास में अवरोध है।

4 **मिश्र, विजय लक्ष्मी (2017) ने** अल्पसंख्यक, पिछड़े एवं अनुसूचित वर्ग के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति मतकोंण का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस शोध का उद्देश्य गोरखपुर जनपद के अल्पसंख्यक, पिछड़े एवं अनुसूचित वर्ग के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी अभिवृति में क्या अन्तर है, का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिए 200 अभिभावकों का चयन किया गया। इस शोध में अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। उपकरण में बालिका शिक्षा मतकोंण मापनी (स्वनिर्मित) का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुया कि बालिका शिक्षा के प्रति अल्पसंख्यक एवं पिछड़े वर्ग के अभिभावकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है ।

5 **गुप्ता, नीलम (2016) ने** हाईस्कूल स्तर पर छात्राओं हेतु शासन द्वारा क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन पर शोध किया। इस शोध का मुख्य उद्धेश्य हाईस्कूल स्तर पर छात्राओं हेतु भाासन द्वारा क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन करना था। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श के लिए रायपुर शहर के धरसीवां विकासखण्ड के पांच शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला का चयन किया गया है प्रत्येक विद्यालय के 14 एवं 15 वर्ष के 30–30 विद्यार्थियों का चयन किया गया है कुल 150 छात्राओं का चयन किया है। आंकडों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकडों का सांख्यिकी विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में यह प्राप्त हुआ कि सरस्वती सांयकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है। निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आया है। निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण योजना से शाला त्यागी छात्राओं की संख्या में कमी आई है।

6 **जैन, डॉ. विजया और गुर्जर, प्रेमचन्द (2016) ने** कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों और राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन पर शोध किया। इस शोध का उद्धेश्य जोधपुर संभाग

के कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों की छात्राओं एवं राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। न्यादर्श के लिए राजस्थान के जोधपुर संभाग की राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों और कस्तुरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से चयन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों और राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न है,किन्तु कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर से अधिक है।

7 **ज्योत्सना (2016) ने** शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् छात्राओं में महिला जागरूकता का अध्ययन पर शोध किया। इस शोध का उद्धेश्य शैक्षिक व व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् छात्राओं की सम्पत्ति सम्बन्धी, रोजगार संबंधी, शिक्षा संबंधी एवं विवाह संबंधी महिलाधिकार के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु कुल 700 छात्राओं को यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि द्वारा चयनित किया गया। इस अध्ययन में स्वनिर्मित महिलाधिकार जागरूकता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में तथ्यों का विश्लेषण प्रतिशतता के आधार पर किया गया। प्राप्त परिणामों के विवेचन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् छात्राओं की महिलाधिकार के प्रत्येक आयाम् पर शैक्षिक पाठ्यक्रम की छात्राओं की अपेक्षा जागरूकता अधिक पाई गई।

8 **लोधा, घीसालाल और कोठारी, डॉ. अनिता (2016) ने** बालिका–शिक्षा के प्रति जागरूकता – एक अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस शोध कार्य का मुख्य उद्धेश्य बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना, बालिकाओं की नामांकन की स्थिति ज्ञात करना तथा बालिका शिक्षा के प्रति पुरूषों की जागरूकता का अध्ययन करना था। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकडों का संकलन स्वनिर्मित प्रश्नावली के द्वारा किया गया। प्राप्त आंकडों का विश्लेषण प्रतिशत के द्वारा किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में बालिका शिक्षा के प्रति ज्यादा जागरूकता पायी गयी। ज्यादातर लोग बालिकाओं

को विद्यालय भेजने में अभी भी झिझक महसूस करते हैं और उनकी कम उम्र में ही शादी को इच्छुक रहते हैं।

9 **ढाका, अंजू (2015) ने** विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस शोध कार्य का उद्धेश्य अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओ की विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन करना तथा अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओ की विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस शोधकार्य में डॉ मिनाक्षी शर्मा द्वारा निर्मित विद्यालय सन्तुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकडों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रांतिक अनुपात मान एवं सहसम्बन्ध के द्वारा किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि अनुसूचित जाति व सामान्य वर्ग की बालिकाओ की विद्यालय सन्तुष्टि में सार्थक अंतर है तथा अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य वर्ग की बालिकाओ की विद्यालय सन्तुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

10 **चावड़ा, राजकुमार (2010) ने** बालिका शिक्षा की स्थिति और विकास में समुदाय की सहभागिता का अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस शोध का उद्धेश्य बालिकाओं की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने तथा विद्यालय में बालिकाओं के नामांकन तथा ठहराव के बारे में जानकारी हासिल करना तथा समुदाय की सहभागिता एवं ग्राम शिक्षा समिति द्वारा बालिका शिक्षा के विकास के लिए किए गए प्रयासों को जानना। इस शोध कार्य में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। आंकडों के संकलन के लिए शोधकर्त्ता द्वारा 10 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में जाकर अध्यापकों और बालिकाओं तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं से विचारविमर्श के साथ–साथ विद्यालय के रजिस्टर का अवलोकन किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि बालिकाओं, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र में पिछड़ी जाति की बालिकाओं तथा अनुसूचित जाति की बालिकाओं की शिक्षा के विकास के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। बालिकाओं की पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक स्थिति का भी बालिका शिक्षा पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सर्वशिक्षा अभियान के दौरान बालिकाओं को दी जाने वाली उपलब्ध सुविधाओं और विद्यालय में नियुक्त एक महिला अध्यापक के कारण बालिकाओं वेफ

विद्यालय में नामांकन में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन विद्यालय में उनकी उपस्थिति बालकों से अभी भी कम ही रहती है।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान युग में समाज के संतुलित विकास क लिये शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत में साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, वर्ष 2011 की जनगणना के परिणाम इस बात की पुष्टि करते हैं कि 1951 में भारत की साक्षरता दर 18. 33 प्रतिशत थी जो 2011 में बढकर 74.4 प्रतिशत हो गई है। भारत में पुरूषों में 80.9 प्रतिशत साक्षर हैं तो महिलाओं में मात्र 64.6 प्रतिशत साक्षर हैं। 1951 में महिलाओं की साक्षरता दर 8.86 प्रतिशत थी जो वर्ष 2011 में बढकर 64.6 प्रतिशत हो गई है। राजस्थान का साक्षरता की दृष्टि से भारत में 26वाँ स्थान है 2011 में राजस्थान की कुल साक्षरता 66.10 प्रतिशत रही। जिसमें पुरूष साक्षरता 79.19 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 52.11 प्रतिशत रही। इससे यह ज्ञात होता है कि राजस्थान में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर काफी कम है। राजस्थान में सरकार के द्वारा बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत सी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। परन्तु इतने प्रयासों के फलस्वरूप भी बालिका शिक्षा की स्थिति सोचनीय है। इसलिए शोधकर्त्री के मन में कुछ प्रश्न उत्पन्न हुए–

- राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाएं कौन–कौन सी हैं?
- राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति क्या विद्यार्थी जागरूक हैं?
- राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति क्या शिक्षकों में जागरूकता है?
- राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति क्या अभिभवकों में जागरूकता है?

उपरोक्त प्रश्नों का हल जानने के लिए शोधकर्त्री ने निम्न समस्या का चयन अपने शोध कार्य हेतु किया।

समस्या कथन

राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन

शोध उद्धेश्य

1 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।

2 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन करना।

3 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति अभिभवकों की जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

3 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

4 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

5 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालय के शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

6 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

7 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति अभिभवकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

8 राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र अभिभवकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

पारिभाषिक शब्दावली

- **बालिका शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजना** :– ऐसी योजनाएं जो मुख्यतः बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु क्रियान्वित की जा रही हैं।
- **जागरूकता** :– जागरूकता का शाब्दिक अभिप्राय जानकारी अथवा बोध ज्ञान तथा अपने अधिकार क्षेत्र को प्राप्त करने के लिए सजग रहना है। प्रस्तुत शोध कार्य में जागरूकता से तात्पर्य राजस्थान में बालिकाओं की शिक्षा हेतु क्रियान्वित योजनाओं के प्रति विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों की जागरूकता से है।

शोध में प्रयुक्त विधि

- प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या

- प्रस्तुत शोध में जोधपुर जिले के सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभवकों को जनसंख्या के रूप में माना जाएगा।

न्यादर्श

- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जोधपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों, 200 शिक्षकों एवं 100 अभिभावकों को लिया जायेगा।

न्यादर्श चयन की विधि

- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।

शोध उपकरण

- प्रस्तुत शोध कार्य में स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

आंकडों के स्त्रोत

- प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के स्त्रोत प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के होंगे।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- टी–परीक्षण
- प्रतिशत

परिसीमांकन

1 प्रस्तुत शोध कार्य को जोधपुर जिले तक सीमित रखा जायेगा।

2 प्रस्तुत शोध कार्य में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त जोधपुर जिले के विद्यालयों को ही सम्मिलित किया जायेगाा।

3 प्रस्तुत शोध कार्य में केवल उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं उनके अभिभावकों को ही लिया जायेगा।

संदर्भ सूची

1 अग्रवाल बी.बी.(2009) आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।

2 चावड़ा, राजकुमार (2010). बालिका शिक्षा की स्थिति और विकास में समुदाय की सहभागिता का अध्ययन. प्राथमिक शिक्षक, वर्ष–34, अंक–2, 64–73.

3 दहिया, डॉ.गीता (2018). उच्च माध्यमिक स्तर की विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की आज्ञाकारिता–अवज्ञाकारिता प्रवृति एवं विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन. International Journal of Advanced Research and Development, 3(2), 1249-1255.

4 ढाका, अंजू (2015). विभिन्न वर्गो की बालिकाओं की विद्यालय सन्तुष्टि का अध्ययन. International Journal of Education and Science Research Review, 2(6), 43-45.

5 दत्ता संजय एवं विजयवर्गीय दीपिका (2017): जेंडर विद्यालय एंव समाज, जयपुरः श्री कविता प्रकाशन।

6 गुप्ता, नीलम 2016 हाईस्कूल स्तर पर छात्राओं हेतु भाासन द्वारा क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन. International Multidisciplinary Research journal, IV(V), 91-94.

7 गुप्ता, एस.पी. (2001). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

8 जैन दीप्ति.(2017): लिंग,विद्यालय एंव समाज, आगराः राखी प्रकाशन।

9 जैन, डॉ. विजया और गुर्जर, प्रेमचन्द (2016). कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों और राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन. International Research Journal of Management Sociology & Humanity, 7(11), 294-300.

10 ज्योत्सना (2016). शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् छात्राओं में महिला जागरूकता का अध्ययन. Journal of research, analysis & development, 1(1), 56-63.

11 कपिल एच.के. (2010). अनुसंधान विधियाँ, आगराः एच.पी.भार्गव बुक हाऊस।

12 कॉल,लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

13 लोधा, घीसालाल और कोठारी, डॉ. अनिता (2016). बालिका–शिक्षा के प्रति जागरूकता – एक अध्ययन. Journal of Education & Psychological Research, 6(2), 258-261.

14 मिश्र, विजय लक्ष्मी (2017). अल्पसंख्यक, पिछड़े एवं अनुसूचित वर्ग के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति मतकोंण का तुलनात्मक अध्ययन. Periodic Research, 6(2), 83-87.

15 पाराशर युगल बिहारी और शर्मा सत्यप्रकाश (2016)- जेंडर विद्यालय एंव समाज, जयपुरः राजलक्ष्मी प्रकाशन।

16 सेवानी अशोक(2016): जेंडर विद्यालय एंव समाज, जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

17 सुवालका दीपिका (2016): शिक्षा में लैंगिक मुददें, जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

18 शर्मा, डॉ. देवकीनन्दन (2020). सर्व शिक्षा अभियान की शैक्षिक योजनाओं का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव. International research journal of commerce, arts and science, 11(3), 64-70.

19 शुक्ला, डॉ. सुशील कुमार (2018). आदिम जाति प्रखण्ड पिपराही (जिला रीवा) के आदिवासी बालिकाओं में प्रचलित सामाजिक कुरीतियाँ बालिकाओं की प्रारम्भिक शिक्षा के विकास का अध्ययन. International Journal of Advanced Education and Research, 3(5), 55-58.

20 शेखर, डॉ. बी (1997)– राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान सम्प्राप्तियाँ एवं संभावनाएँ–3, शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर।

21 त्रिपाठी प्रतिमा.(2016): लिंग,विद्यालय एंव समाज, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशनन्स।

Website

- www.rajshiksha.gov.in
- www.rajeduboard.nic.in
- www.minorityaffairs.rajasthan.gov.in
- www.sipf.rajasthan.gov.in